



Kush Rastogi

28 May 1987

04:40 AM

Moradabad

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121896501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 27-28/05/1987
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 04:40:00 घंटे
इष्ट _____: 58:22:57 घटी
स्थान _____: Moradabad
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:50:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:45:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:15:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 04:25:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:44:53 घंटे
सूर्योदय _____: 05:18:49 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:05:37 घंटे
दिनमान _____: 13:46:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 12:26:50 वृष
लग्न के अंश _____: 00:45:30 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: सुकर्मा
करण _____: किंस्तुघ्न
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	ज्येष्ठ	7
पंजाबी	संवत : 2044	ज्येष्ठ	14
बंगाली	सन् : 1394	ज्येष्ठ	13
तमिल	संवत : 2044	वैकासी	14
केरल	कोल्लम : 1162	इदवम	14
नेपाली	संवत : 2044	ज्येष्ठ	14
चैत्रादि	संवत : 2044	ज्येष्ठ	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2044	ज्येष्ठ	कृष्ण 1

पंचांग

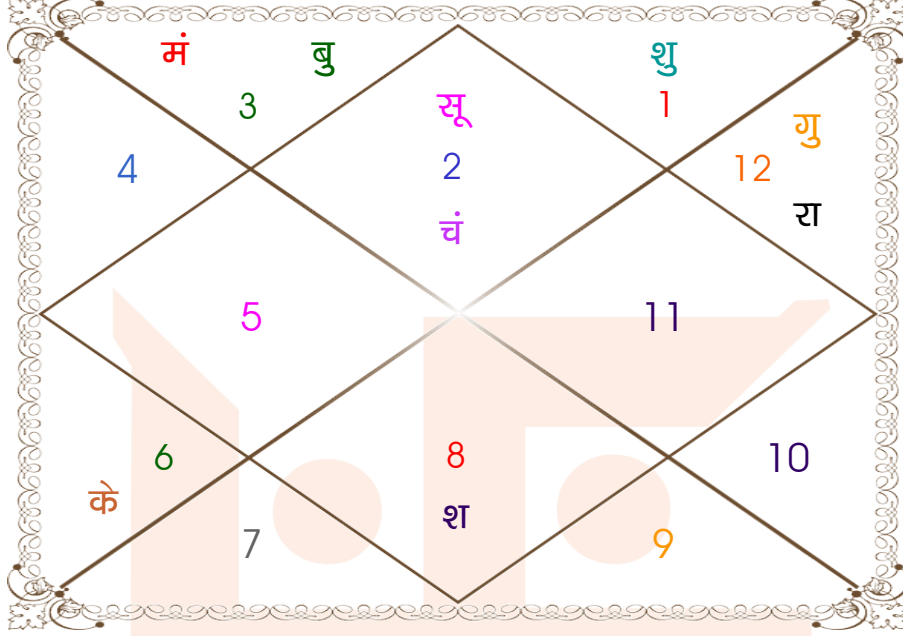
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 15
तिथि समाप्ति काल _____ : 20:43:20
जन्म तिथि _____ : 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:34:15 घंटे
जन्म योग _____ : रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 13:01:37 घंटे
जन्म योग _____ : सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____ : चतुष्पाद
करण समाप्ति काल _____ : 08:03:58 घंटे
जन्म करण _____ : किंस्तुघ्न
भयात _____ : 30:14:22
भभोग _____ : 65:20:53
भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 5 वर्ष 4 मा 8 दि

घात चक्र

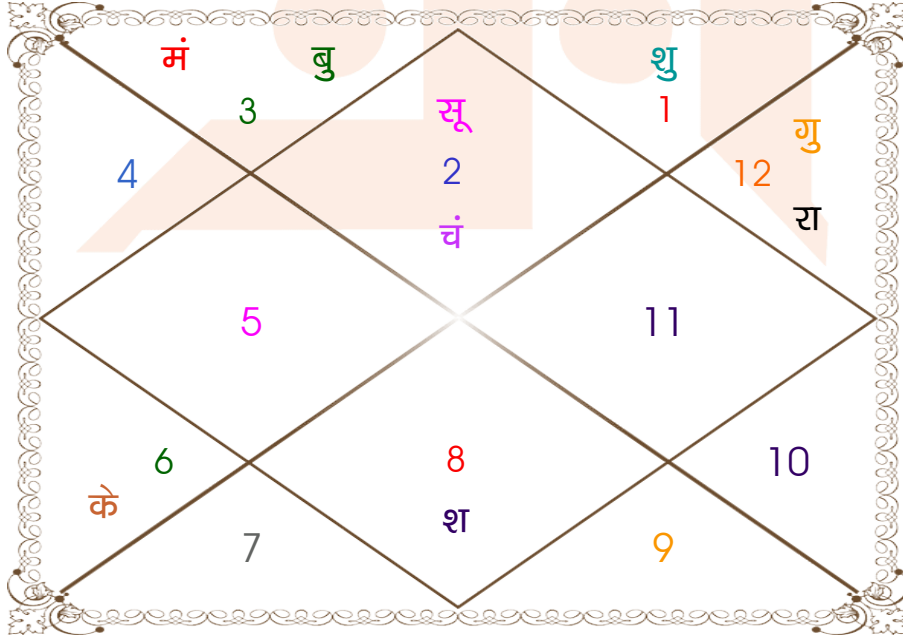
मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा गु	शु	चं ल सू	मं बु
	श		के

लग्न कुंडली

चं बु मं	सू ल	शु	रा गु
	के		श

विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 4मा 8दि
चन्द्र

28/05/1987

06/10/2102

चन्द्र	04/10/1992
मंगल	05/10/1999
राहु	04/10/2017
गुरु	04/10/2033
शनि	04/10/2052
बुध	04/10/2069
केतु	04/10/2076
शुक्र	04/10/2096
सूर्य	06/10/2102

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 8मा 30दि
सिद्धा

25/02/2020

25/02/2027

सिद्धा	07/07/2021
संकटा	26/01/2023
मंगला	07/04/2023
पिंगला	27/08/2023
धान्या	27/03/2024
भामरी	05/01/2025
भद्रिका	26/12/2025
उल्का	25/02/2027

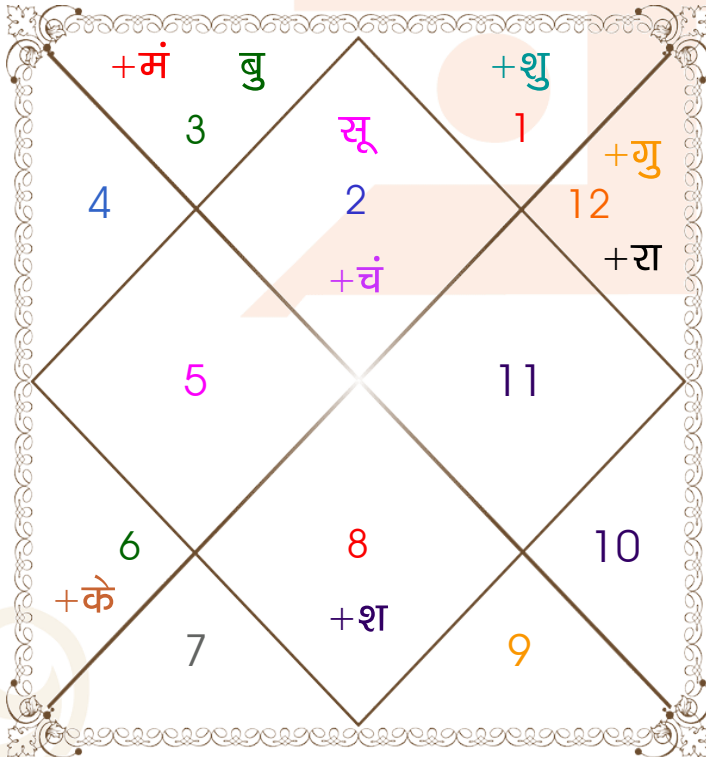
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	00:45:30	413:32:12	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	---
सूर्य			वृष	12:26:50	00:57:37	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			वृष	16:11:30	12:14:51	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल			मिथु	10:45:54	00:38:56	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	शत्रु राशि
बुध			मिथु	03:01:06	01:32:52	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	शुक्र	स्वराशि
गुरु			मीन	26:18:33	00:12:07	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			मेष	19:00:36	01:12:48	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	सम राशि
शनि	व		वृश्चि	25:05:11	00:04:17	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	16:23:14	00:09:59	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	सम राशि
केतु	व		कन्या	16:23:14	00:09:59	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		धनु	01:49:45	00:02:16	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप	व		धनु	13:45:00	00:01:19	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो	व		तुला	14:08:27	00:01:26	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	बुध	---
दशम भाव			मक	15:06:32	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	गुरु	--

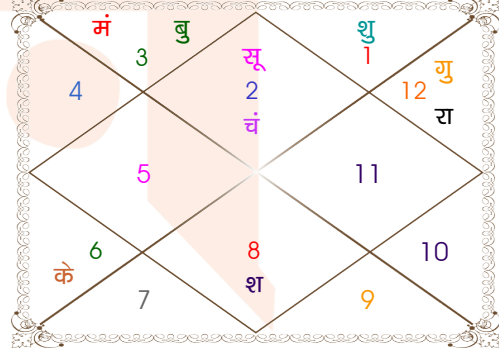
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:48

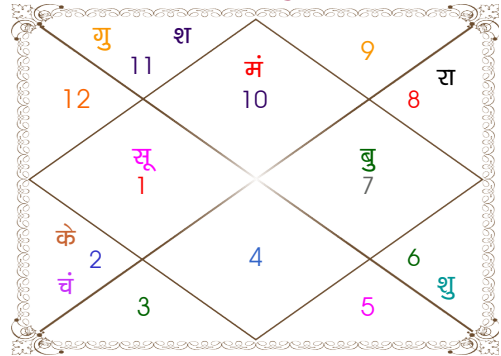
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 13:09:00	वृष 00:45:30
2	वृष 13:09:00	वृष 25:32:31
3	मिथुन 07:56:01	मिथुन 20:19:32
4	कर्क 02:43:02	कर्क 15:06:32
5	सिंह 02:43:02	सिंह 20:19:32
6	कन्या 07:56:01	कन्या 25:32:31
7	तुला 13:09:00	वृश्चिक 00:45:30
8	वृश्चिक 13:09:00	वृश्चिक 25:32:31
9	धनु 07:56:01	धनु 20:19:32
10	मकर 02:43:02	मकर 15:06:32
11	कुम्भ 02:43:02	कुम्भ 20:19:32
12	मीन 07:56:01	मीन 25:32:31

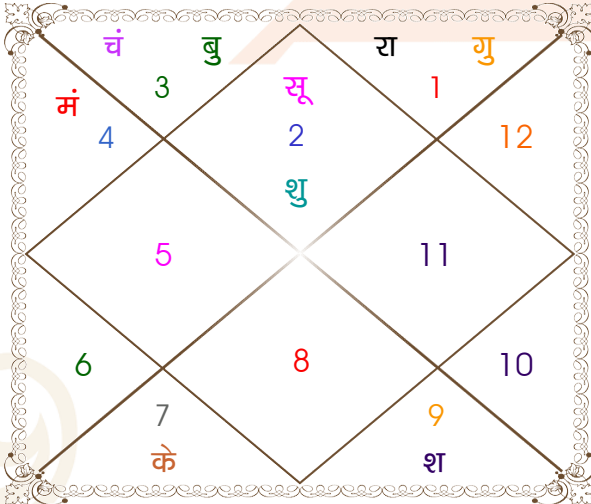
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	00:45:30
2	वृष	27:24:00
3	मिथुन	20:44:02
4	कर्क	15:06:32
5	सिंह	14:17:11
6	कन्या	20:47:28
7	वृश्चिक	00:45:30
8	वृश्चिक	27:24:00
9	धनु	20:44:02
10	मकर	15:06:32
11	कुम्भ	14:17:11
12	मीन	20:47:28

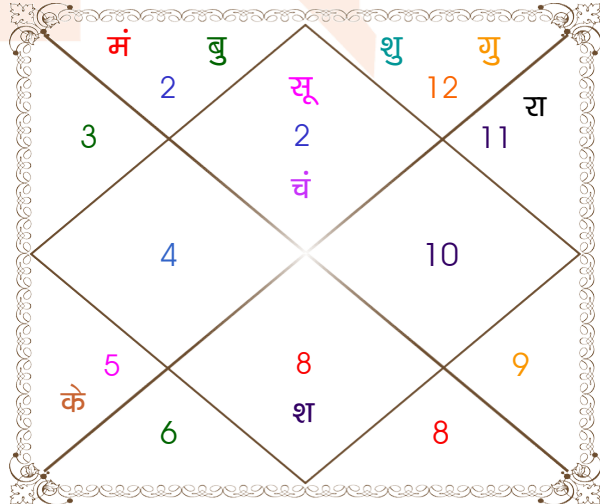
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



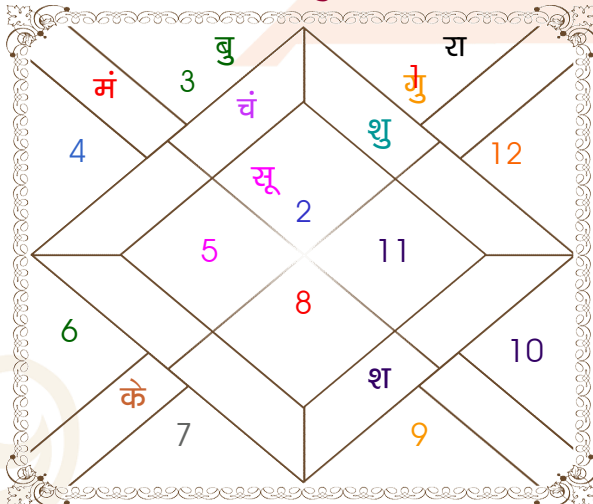
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	पुत्र	पितृ	युवा	खल	आगम	8.20	40 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	आगम	16.68	75 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	कुमार	खल	प्रकाश	0.52	63 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	स्वस्थ	निद्रा	3.25	62 %
गुरु	आत्मा	धन	बाल	स्वस्थ	प्रकाश	4.74	25 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	वृद्ध	शान्त	प्रकाश	8.43	46 %
शनि	अमात्य	आयु	बाल	खल	प्रकाश	1.61	37 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	निपीदित	निद्रा	0.00	51 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	खल	शयन	0.00	51 %
कुल						43.43	

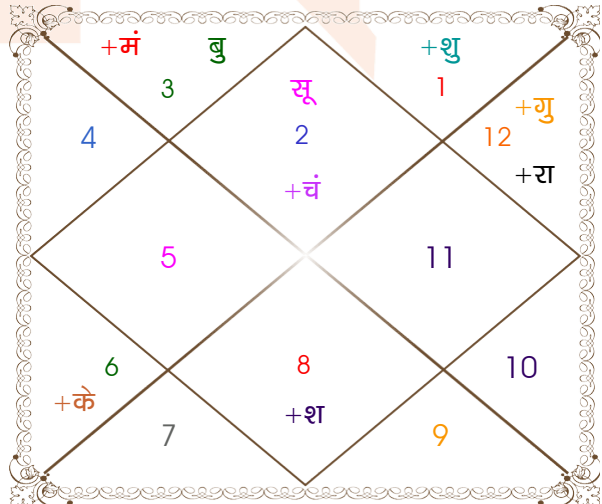
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 5 वर्ष 4 मास 8 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
28/05/1987	04/10/1992	05/10/1999	04/10/2017	04/10/2033
04/10/1992	05/10/1999	04/10/2017	04/10/2033	04/10/2052
00/00/0000	मंगल 02/03/1993	राहु 17/06/2002	गुरु 22/11/2019	शनि 07/10/2036
00/00/0000	राहु 21/03/1994	गुरु 10/11/2004	शनि 05/06/2022	बुध 17/06/2039
00/00/0000	गुरु 25/02/1995	शनि 17/09/2007	बुध 10/09/2024	केतु 26/07/2040
28/05/1987	शनि 04/04/1996	बुध 05/04/2010	केतु 17/08/2025	शुक्र 26/09/2043
शनि 04/08/1988	बुध 02/04/1997	केतु 23/04/2011	शुक्र 17/04/2028	सूर्य 07/09/2044
बुध 04/01/1990	केतु 29/08/1997	शुक्र 23/04/2014	सूर्य 03/02/2029	चंद्र 08/04/2046
केतु 05/08/1990	शुक्र 29/10/1998	सूर्य 18/03/2015	चंद्र 05/06/2030	मंगल 18/05/2047
शुक्र 04/04/1992	सूर्य 06/03/1999	चंद्र 16/09/2016	मंगल 12/05/2031	राहु 24/03/2050
सूर्य 04/10/1992	चंद्र 05/10/1999	मंगल 04/10/2017	राहु 04/10/2033	गुरु 04/10/2052

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
04/10/2052	04/10/2069	04/10/2076	04/10/2096	06/10/2102
04/10/2069	04/10/2076	04/10/2096	06/10/2102	00/00/0000
बुध 03/03/2055	केतु 02/03/2070	शुक्र 04/02/2080	सूर्य 22/01/2097	चंद्र 06/08/2103
केतु 28/02/2056	शुक्र 03/05/2071	सूर्य 03/02/2081	चंद्र 23/07/2097	मंगल 06/03/2104
शुक्र 29/12/2058	सूर्य 07/09/2071	चंद्र 05/10/2082	मंगल 28/11/2097	राहु 05/09/2105
सूर्य 04/11/2059	चंद्र 07/04/2072	मंगल 05/12/2083	राहु 23/10/2098	गुरु 05/01/2107
चंद्र 05/04/2061	मंगल 04/09/2072	राहु 04/12/2086	गुरु 11/08/2099	शनि 29/05/2107
मंगल 02/04/2062	राहु 22/09/2073	गुरु 04/08/2089	शनि 24/07/2100	00/00/0000
राहु 19/10/2064	गुरु 29/08/2074	शनि 04/10/2092	बुध 30/05/2101	00/00/0000
गुरु 25/01/2067	शनि 08/10/2075	बुध 05/08/2095	केतु 05/10/2101	00/00/0000
शनि 04/10/2069	बुध 04/10/2076	केतु 04/10/2096	शुक्र 06/10/2102	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 5 वर्ष 4 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र 17/08/2025 17/04/2028	गुरु - सूर्य 17/04/2028 03/02/2029	गुरु - चंद्र 03/02/2029 05/06/2030	गुरु - मंगल 05/06/2030 12/05/2031	गुरु - राहु 12/05/2031 04/10/2033
शुक्र 26/01/2026 सूर्य 16/03/2026 चंद्र 05/06/2026 मंगल 01/08/2026 राहु 25/12/2026 गुरु 04/05/2027 शनि 05/10/2027 बुध 20/02/2028 केतु 17/04/2028	सूर्य 01/05/2028 चंद्र 26/05/2028 मंगल 12/06/2028 राहु 25/07/2028 गुरु 02/09/2028 शनि 19/10/2028 बुध 29/11/2028 केतु 16/12/2028 शुक्र 03/02/2029	चंद्र 15/03/2029 मंगल 13/04/2029 राहु 25/06/2029 गुरु 29/08/2029 शनि 14/11/2029 बुध 22/01/2030 केतु 19/02/2030 शुक्र 11/05/2030 सूर्य 05/06/2030	मंगल 25/06/2030 राहु 15/08/2030 गुरु 29/09/2030 शनि 22/11/2030 बुध 10/01/2031 केतु 29/01/2031 शुक्र 27/03/2031 सूर्य 13/04/2031 चंद्र 12/05/2031	राहु 20/09/2031 गुरु 15/01/2032 शनि 02/06/2032 बुध 04/10/2032 केतु 24/11/2032 शुक्र 19/04/2033 सूर्य 02/06/2033 चंद्र 14/08/2033 मंगल 04/10/2033
शनि - शनि 04/10/2033 07/10/2036	शनि - बुध 07/10/2036 17/06/2039	शनि - केतु 17/06/2039 26/07/2040	शनि - शुक्र 26/07/2040 26/09/2043	शनि - सूर्य 26/09/2043 07/09/2044
शनि 27/03/2034 बुध 30/08/2034 केतु 02/11/2034 शुक्र 04/05/2035 सूर्य 28/06/2035 चंद्र 28/09/2035 मंगल 01/12/2035 राहु 14/05/2036 गुरु 07/10/2036	बुध 23/02/2037 केतु 22/04/2037 शुक्र 03/10/2037 सूर्य 21/11/2037 चंद्र 11/02/2038 मंगल 09/04/2038 राहु 03/09/2038 गुरु 13/01/2039 शनि 17/06/2039	केतु 11/07/2039 शुक्र 16/09/2039 सूर्य 07/10/2039 चंद्र 09/11/2039 मंगल 03/12/2039 राहु 02/02/2040 गुरु 27/03/2040 शनि 30/05/2040 बुध 26/07/2040	शुक्र 04/02/2041 सूर्य 03/04/2041 चंद्र 08/07/2041 मंगल 14/09/2041 राहु 06/03/2042 गुरु 07/08/2042 शनि 06/02/2043 बुध 20/07/2043 केतु 26/09/2043	सूर्य 13/10/2043 चंद्र 11/11/2043 मंगल 01/12/2043 राहु 22/01/2044 गुरु 08/03/2044 शनि 02/05/2044 बुध 21/06/2044 केतु 11/07/2044 शुक्र 07/09/2044
शनि - चंद्र 07/09/2044 08/04/2046	शनि - मंगल 08/04/2046 18/05/2047	शनि - राहु 18/05/2047 24/03/2050	शनि - गुरु 24/03/2050 04/10/2052	बुध - बुध 04/10/2052 03/03/2055
चंद्र 25/10/2044 मंगल 28/11/2044 राहु 22/02/2045 गुरु 10/05/2045 शनि 10/08/2045 बुध 31/10/2045 केतु 04/12/2045 शुक्र 10/03/2046 सूर्य 08/04/2046	मंगल 02/05/2046 राहु 01/07/2046 गुरु 24/08/2046 शनि 27/10/2046 बुध 24/12/2046 केतु 16/01/2047 शुक्र 25/03/2047 सूर्य 14/04/2047 चंद्र 18/05/2047	राहु 21/10/2047 गुरु 08/03/2048 शनि 20/08/2048 बुध 14/01/2049 केतु 16/03/2049 शुक्र 05/09/2049 सूर्य 27/10/2049 चंद्र 22/01/2050 मंगल 24/03/2050	गुरु 25/07/2050 शनि 19/12/2050 बुध 29/04/2051 केतु 22/06/2051 शुक्र 23/11/2051 सूर्य 08/01/2052 चंद्र 25/03/2052 मंगल 18/05/2052 राहु 04/10/2052	बुध 06/02/2053 केतु 29/03/2053 शुक्र 23/08/2053 सूर्य 06/10/2053 चंद्र 18/12/2053 मंगल 07/02/2054 राहु 19/06/2054 गुरु 14/10/2054 शनि 03/03/2055

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - केतु 03/03/2055 28/02/2056	बुध - शुक्र 28/02/2056 29/12/2058	बुध - सूर्य 29/12/2058 04/11/2059	बुध - चंद्र 04/11/2059 05/04/2061	बुध - मंगल 05/04/2061 02/04/2062
केतु 24/03/2055 शुक्र 23/05/2055 सूर्य 10/06/2055 चंद्र 10/07/2055 मंगल 01/08/2055 राहु 24/09/2055 गुरु 11/11/2055 शनि 08/01/2056 बुध 28/02/2056	शुक्र 18/08/2056 सूर्य 09/10/2056 चंद्र 03/01/2057 मंगल 05/03/2057 राहु 07/08/2057 गुरु 23/12/2057 शनि 05/06/2058 बुध 29/10/2058 केतु 29/12/2058	सूर्य 13/01/2059 चंद्र 08/02/2059 मंगल 26/02/2059 राहु 14/04/2059 गुरु 25/05/2059 शनि 13/07/2059 बुध 26/08/2059 केतु 13/09/2059 शुक्र 04/11/2059	चंद्र 17/12/2059 मंगल 17/01/2060 राहु 03/04/2060 गुरु 11/06/2060 शनि 01/09/2060 बुध 13/11/2060 केतु 14/12/2060 शुक्र 10/03/2061 सूर्य 05/04/2061	मंगल 26/04/2061 राहु 19/06/2061 गुरु 06/08/2061 शनि 03/10/2061 बुध 23/11/2061 केतु 14/12/2061 शुक्र 13/02/2062 सूर्य 03/03/2062 चंद्र 02/04/2062
बुध - राहु 02/04/2062 19/10/2064	बुध - गुरु 19/10/2064 25/01/2067	बुध - शनि 25/01/2067 04/10/2069	केतु - केतु 04/10/2069 02/03/2070	केतु - शुक्र 02/03/2070 03/05/2071
राहु 20/08/2062 गुरु 22/12/2062 शनि 18/05/2063 बुध 27/09/2063 केतु 21/11/2063 शुक्र 24/04/2064 सूर्य 09/06/2064 चंद्र 26/08/2064 मंगल 19/10/2064	गुरु 07/02/2065 शनि 18/06/2065 बुध 13/10/2065 केतु 30/11/2065 शुक्र 17/04/2066 सूर्य 29/05/2066 चंद्र 06/08/2066 मंगल 23/09/2066 राहु 25/01/2067	शनि 30/06/2067 बुध 16/11/2067 केतु 12/01/2068 शुक्र 24/06/2068 सूर्य 12/08/2068 चंद्र 02/11/2068 मंगल 30/12/2068 राहु 26/05/2069 गुरु 04/10/2069	केतु 13/10/2069 शुक्र 07/11/2069 सूर्य 14/11/2069 चंद्र 27/11/2069 मंगल 05/12/2069 राहु 28/12/2069 गुरु 17/01/2070 शनि 09/02/2070 बुध 02/03/2070	शुक्र 12/05/2070 सूर्य 03/06/2070 चंद्र 08/07/2070 मंगल 02/08/2070 राहु 05/10/2070 गुरु 01/12/2070 शनि 06/02/2071 बुध 08/04/2071 केतु 03/05/2071
केतु - सूर्य 03/05/2071 07/09/2071	केतु - चंद्र 07/09/2071 07/04/2072	केतु - मंगल 07/04/2072 04/09/2072	केतु - राहु 04/09/2072 22/09/2073	केतु - गुरु 22/09/2073 29/08/2074
सूर्य 09/05/2071 चंद्र 20/05/2071 मंगल 27/05/2071 राहु 15/06/2071 गुरु 02/07/2071 शनि 23/07/2071 बुध 10/08/2071 केतु 17/08/2071 शुक्र 07/09/2071	चंद्र 25/09/2071 मंगल 08/10/2071 राहु 09/11/2071 गुरु 07/12/2071 शनि 10/01/2072 बुध 09/02/2072 केतु 21/02/2072 शुक्र 28/03/2072 सूर्य 07/04/2072	मंगल 16/04/2072 राहु 09/05/2072 गुरु 28/05/2072 शनि 21/06/2072 बुध 12/07/2072 केतु 21/07/2072 शुक्र 15/08/2072 सूर्य 22/08/2072 चंद्र 04/09/2072	राहु 31/10/2072 गुरु 21/12/2072 शनि 20/02/2073 बुध 15/04/2073 केतु 08/05/2073 शुक्र 11/07/2073 सूर्य 30/07/2073 चंद्र 31/08/2073 मंगल 22/09/2073	गुरु 07/11/2073 शनि 31/12/2073 बुध 17/02/2074 केतु 09/03/2074 शुक्र 05/05/2074 सूर्य 22/05/2074 चंद्र 19/06/2074 मंगल 09/07/2074 राहु 29/08/2074

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

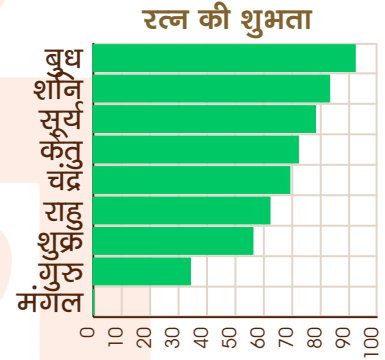
मूलांक	1
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	92%	धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	83%	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	78%	स्वास्थ्य, सुख
लहसुनिया	केतु	72%	सन्तति सुख, धन
मोती	चंद्र	69%	स्वास्थ्य, पराक्रम
गोमेद	राहु	62%	धनार्जन
हीरा	शुक्र	56%	कम खर्च, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	34%	हानि, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	0%	धन हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	04/10/1992	84%	82%	0%	98%	34%	56%	83%	50%	59%
मंगल	05/10/1999	84%	75%	25%	79%	46%	56%	83%	50%	78%
राहु	04/10/2017	66%	57%	0%	92%	34%	62%	89%	75%	59%
गुरु	04/10/2033	84%	75%	12%	79%	54%	38%	83%	62%	72%
शनि	04/10/2052	66%	57%	0%	98%	34%	62%	95%	69%	59%
बुध	04/10/2069	84%	57%	0%	100%	34%	62%	83%	62%	72%
केतु	04/10/2076	66%	57%	12%	92%	34%	62%	70%	50%	84%
शुक्र	04/10/2096	66%	57%	0%	98%	34%	69%	89%	69%	78%
सूर्य	06/10/2102	91%	75%	12%	92%	46%	38%	70%	50%	59%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम व माणिक्य रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना व माणिक्य रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, मोती, गोमेद एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मूंगा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपके लिए बुध रत्न पन्ना धारण करना उत्तम फलदायक रहेगा। पन्ना रत्न धारण करने से आपकी नियोजन क्षमता बेहतर होगी। आपकी कार्य योजनाएं सुव्यवस्थित होंगी। रत्न पन्ना आपकी वाकशक्ति, धन, विद्या, कुटुम्ब सुख की वृद्धि करेगा। सभा में अपनी बात कहने की योग्यता का विकास होगा। इसे धारण करने पर आप लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने में सफल हो पायेंगे। रत्न पन्ना आपको सुविचारक या वक्ता बनाने में सहयोग करेगा। बुद्धि से धनार्जन में पन्ना रत्न उपयोगी साबित होगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको उद्भोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है। तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यों से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुड़े कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र

के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते हैं। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपत्ति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते हैं। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छे संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पत्ति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूठी, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम 9 माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का

धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु कन्या राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी बुध दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे।

मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र आपके लिए पराक्रमेश है। चंद्र ग्रह की शुभता बढ़ाने और इनके साथ बन रहे अशुभ योगों को निष्फल करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहनों से सहयोग, विद्या-बुद्धि एवं संतान सुख दे सकता है। शुभ मोती आपको प्रसन्नचित्त रख सकता है। मोती रत्न से भाग्योदय तथा धर्मपालन में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। तृतीयेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र ग्रह को शक्तिशाली बना सकते हैं।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौँ सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके

अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मी से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते हैं।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है।

अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज से जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में कमी के योग बना सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ सकता है। नौकर चाकरों से सुख सहयोग प्राप्त करने में आपको दिक्कतें आ सकती हैं। सरकारी क्षेत्र से आय प्राप्ति के लिए आपमें योग्यता की कमी हो सकती है। वैवाहिक जीवन के लिए भी यह रत्न अनुकूल नहीं रहेगा। आमदनी के साधन सीमित हो सकते हैं। आपके लाभ कम हो सकते हैं। यह रत्न आपको कंजूस बना सकता है। आपकी पूर्वार्जित संपत्ति को कोई छिन्नने का प्रयास कर सकता है। मित्रों की सलाह आपके भाग्य में कमी का कारण बन सकता है। संतान को लेकर आपको कुछ चिंताएं हो सकती हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्टमेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती हैं। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपको दुष्ट लोगों के कारण परेशानी हो सकती है। रत्न प्रभाव से कभी-कभी आपको पारिवारिक असंतोष का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी वाणी में कठोरता एवं क्रोध दे सकता है। अनावश्यक विश्वास के कारण आपको धन हानि हो सकती है। आपको दांतों में कष्ट की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न की प्रतिकूलता से आपको परिवार से रुखा व्यवहार मिलने के कारण दुःख का अनुभव करा सकता है। बिजली तथा आग से नुकसान हो सकता है। आप तीखे भोजन के शौकीन हो सकते हैं।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना

में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते हैं। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु

(04/10/2017 - 04/10/2033)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, नीलम, पन्ना व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(04/10/2033 - 04/10/2052)

शनि की दशा में आपका पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य, हीरा, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(04/10/2052 - 04/10/2069)

बुध की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(04/10/2069 - 04/10/2076)

केतु की दशा में आपका पन्ना व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, माणिक्य, हीरा, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(04/10/2076 - 04/10/2096)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद, माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(04/10/2096 - 06/10/2102)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व हीरा रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात् यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात् यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक कराये तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहत करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
सम
अशुभ

क्षेत्र

दुर्घटना से बचाव
व्यय
स्वास्थ्य
धन
सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराकम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराकम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाए रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।



Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre

Brahmavidyapeeth Shukatirtha

9897180017

ashok.shukla.mzn@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप ज्ञानार्जन में दुविधा होती है। उच्च शिक्षा में आंशिक रूप से बाधा आती है। स्मरणशक्ति का थोड़ा बहुत हास होता है। जातक नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की आशा होते हुए भी आंशिक रूप में नुकसान प्राप्त करता है। चाचा व चचेरे भाईयों से कलह रहता है तथा बड़े भाई के साथ झगड़ा होने की संभावना बनी रहती है। जातक अपने जन्म स्थान से प्रायः बहुत दूर रहता है एवं एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहता है। कुछ समय बाद जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान पक्ष से थोड़ी बहुत परेशानी उठानी पड़ती है और लाभ में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है। व्यक्ति चिन्तातुर रहता है तथा धन के मामले को लेकर कभी थोड़ी बहुत बदनामी या आंशिक रूप में संघर्ष की स्थिति बन जाती है। जातक को सर्वत्र लाभ ही लाभ दिखाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रूपयों की तरह हस्तगत नहीं होता।

इस योग के प्रभाव से जातक को हृदय रोग, नेत्ररोग, अनिद्रा आदि कभी घेर लेती है। जिसमें आंशिक रूप से जातक को कष्ट उठाना पड़ता है। परिवार में विग्रह रहता है। जातक का जीवन संघर्षमय रहता है और जातक का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संधी, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मेष राशि में शुक हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में प्रथम भाव में वृष राशि उत्पन्न हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न जातक धैर्यवान एवं सहिष्णु होते हैं तथा वाणी में भी मधुरता होती है। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते हैं तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता रहती है तथा इसी परिश्रम के द्वारा वे जीवन में सफल रहते हैं तथा समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करने में समर्थ होते हैं। स्वभाव से वे प्रायः शांति प्रिय होते हैं परन्तु साहस एवं पराक्रम से युक्त रह कर अपने कार्यों को सफल बनाते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप की वाणी मधुर होगी तथा अन्य जनों को स्ववाक्चातुर्य से प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उदारता एवं सहिष्णुता का भाव विद्यमान रहेगा। फलतः आपके सांसारिक महत्व के कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि रहेगी तथा लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। अतः अपने सदगुणों के द्वारा आप अपने श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा कला एवं साहित्य के प्रति आपके मन में रुचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सुखैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करके आनंद पूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

लग्न में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से आप स्वाभिमानी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम योग्यता एवं पराक्रम से जीवन में उन्नतिमार्ग पर अग्रसर रहेंगे। आप में यदा कदा तेजस्विता का भाव भी उत्पन्न होगा तथा उत्साह भी नित्य बना रहेगा। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति होंगे तथा अपनी चतुराई एवं कौशल से अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। आप की बुद्धि भी तीव्र होगी तथा आपके कार्यों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप रहेगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। स्त्री एवं पुत्र से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। यदा कदा सूर्य के प्रभाव से आप में क्रोध का भाव भी उत्पन्न होगा परन्तु उसमें नियंत्रण रखने में समर्थ होंगे। जीवन में आप अपने अथक परिश्रम पराक्रम एवं उत्साह के द्वारा समाज तथा सामाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा तथा उन्नति प्राप्त करेंगे तथा किसी उच्च पद पर भी आपकी नियुक्ति हो सकती है जिससे सर्वत्र आपका प्रभाव बना रहेगा। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी अथवा धनिक वर्ग से आपको धन लाभ एवं सहयोग भी जीवन में मिलता रहेगा।

इस प्रकार आप स्वस्थ परिश्रमी पराक्रमी तथा शांत स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा

जीवन में इच्छित धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे ।



Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre

Brahmavidyapeeth Shukatirtha

9897180017

ashok.shukla.mzn@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रुचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते हैं। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृत्ति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते हैं जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचन से ही आपकी रुचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उत्तीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्य बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक तथा अन्य कार्य कलाओं को सामान्य बुद्धि से ही सम्पन्न करेंगे। आपको गंभीर समस्याओं का समाधान करने में काफी परिश्रम का सामना करना पड़ेगा। अतः यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करने में विलंब का सामना करना पड़ेगा। वैदिक एवं धर्मशास्त्र तथा दर्शन के ग्रन्थों में आपकी अल्प रुचि होगी परंतु आधुनिक एवं पाश्चात्य साहित्य एवं विज्ञान में अवश्य रुचि एवं अध्ययनशील होंगे तथा इनमें आप परिश्रम पूर्वक न्यूनाधिक मात्रा में सम्मान अर्जित करने में समर्थ होंगे। जिससे समाज में आपको यथोचित सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

पंचमभाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा कई बार एक से अधिक प्रसंग भी आप स्थापित कर सकते हैं। आपके लिए प्रेम प्रसंगों में मर्यादा तथा आदर्श के भाव की न्यूनता होगी जिससे कई बार आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः ऐसी प्रवृत्तियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

केतु की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में काफी विलंब का सामना करना पड़ सकता है परंतु विलंब से ही सही संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति गुणवान, तेजस्वी एवं पराक्रमी होगी तथा जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में उनको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथापि अपनी आजीविका अर्जित करने में वे समर्थ होंगे। लेकिन वह हठी एवं मनमौजी प्रवृत्ति के होंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपनी मर्जी से सम्पन्न करेंगे एवं माता पिता की सलाह लेना आवश्यक नहीं समझेंगे। माता पिता का ध्यान भी वृद्धावस्था में कम ही रखेंगे। अतः बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। माता की अपेक्षा पिता से उनका अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के ही माध्यम से करना पसन्द करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चों की उन्नति संतोषप्रद होगी तथा आजीविका प्राप्त करने की आवश्यकता ही पूर्ण होगी तथापि वे व्यवहार कुशल होंगे। अतः धन ऐश्वर्य की उनके पास कमी नहीं होगी। जिससे उनका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त वे स्वभाव से तेजस्वी भी होंगे अतः समय समय पर अन्य सामाजिक जनों से उनका वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे समाज में उनके एवं आपके मान सम्मान में कमी भी आ सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए तभी आपका एवं उनका जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत हो सकता है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया वृश्चिक राशि के सप्तम भाव में होने से जातक का सहयोगी धनवान पित प्रकृति एवं व्ययशील प्रवृत्ति का मनुष्य होता है। साथ ही शनि के प्रभाव से वह उग्रस्वभाव पराक्रमी एवं साहसी होता है लेकिन चंचलता की अपेक्षा गंभीरता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमती महिला होगी तथा चतुराई से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेगी। वह भौतिकतावादी एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी एवं पाश्चत्य शास्त्रों के अध्ययन में विशेष रुचि रखेंगी। साथ ही गंभीरता का भाव भी उनके स्वभाव में विद्यमान होगा कर्तव्य परायणता की भावना भी उनमें रहेगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर होंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद ऊंचा रहेगा। शारीरिक संरचना शनि जैसे शुष्क ग्रह के प्रभाव से दुबली पतली होगी परन्तु आकर्षण विद्यमान रहेगा साथ ही अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे उनका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सौन्दर्य के प्रति सतर्क रहेंगी एवं समयानुसार सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा लेकिन वैवाहिक प्रक्रिया समय पर पूर्ण हो जाएगी। आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा एवं विशिष्ट परिस्थितियों में आप अपनी इच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते हैं विवाह के बाद सामान्यतया आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा परन्तु दोनों की प्रवृत्ति स्वाभिमानि एवं तेजस्वी होने के कारण अल्प समय के लिए आपसी वाद विवाद के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है अतः यदि आप दोनों संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य लें तो संबंधों में मधुरता हो सकती है।

आपका विवाह समृद्ध एवं धनवान परिवार से सम्पन्न होगा तथा सामाजिक रूप से भी वे प्रभावशाली रहेंगे अतः विवाह के समय दहेज के रूप में आपको पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं अन्य बहुमूल्य उपहार भी मिलेंगे साथ ही भविष्य में भी आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा विशिष्ट अवसरों पर ही मेल मिलाप होगा लेकिन आपसी सौहार्दता बनी रहेगी।

वृश्चिक राशि में शनि के प्रभाव से आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा की भावना अल्प होगी एवं सुख दुख में उनका ध्यान कम ही रखेंगी। अपने उग्रस्वभाव से देवर एवं ननद भी उनको विशेष सम्मान एवं सहयोग प्रदान नहीं करेंगे जिससे पारिवारिक सुख शांति प्रभावित होगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे हानि की संभावना रहेगी अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते हैं। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यों से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वाब्द सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वाब्द में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वाब्द अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निर्धारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संघर्ष भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रुकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती है। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(04/10/2017 - 04/10/2033)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 04/10/2017 शुरू तथा 04/10/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, आमदनी, लाभ, समृद्धि, स्वास्थ्य लाभ और भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति आपकी कुण्डली में एकादश भाव में है तथा तृतीय, पंचम एवं सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह साल की यह अवधि आपके लिए साहस एवं समृद्धि की होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु एकादश भाव में स्थित होकर तृतीय भाव को (पंचम एवं सप्तम भावों के अतिरिक्त) देख रहा है जिसके फल स्वरूप आप हिम्मत, बहादुरी तथा मजबूती के साथ सभी समस्याओं को झेल पाएंगे और कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको या आपके स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं कर पाएगी और आपको सामान्य कार्य करने में असुविधा नहीं होगी।

अर्थ-संपत्ति :

गुरु एकादश भाव अर्थात् आय भाव में स्थित है तथा अपने ही भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है जिसके फलस्वरूप आप इस दशा काल में चल या अचल संपत्ति अर्जित नहीं कर पाएँगे और भोग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते हुए एक सामान्य जीवन का आनन्द लेंगे।

व्यवसाय :

यदि आप नौकरी में हैं तो आपको उन्नति तथा आय एवं धन में वृद्धि मिलेगी। व्यवसाय के प्रति अनेक नये विचार आपके दिमाग में आएँगे जिससे आप अपने व्यवसाय में नाम और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आपके मित्र व्यवसाय में उन्नति करने की आपको प्रेरणा देंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे और आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय तथा उत्साहपूर्ण बनाएँगे। गुरु की एकादश भाव से सप्तम अर्थात् जीवन साथी के भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप आपके जीवन साथी हमेशा आपकी परेशानी में हाथ बँटाने के लिए तैयार रहेंगे। आपके बड़े भाई तथा मित्र भी आपके पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आपकी ज्ञान की खोज के प्रति रुचि रहेगी।



Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre

Brahmavidyapeeth Shukatirtha

9897180017

ashok.shukla.mzn@gmail.com

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(17/08/2025 - 17/04/2028)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 04/10/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 17/08/2025 को प्रारंभ होकर 17/04/2028 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। मितव्ययता और बचत से धन का संचय हो सकता है। संचित धन को टूटने न दें। अध्यात्म और दान-धर्म में रुचि हो सकती है। लोगों की भलाई के कार्य करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज अदा कर सकते हैं। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो संकत है।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता की यात्राएं होंगी; धनी बनेंगी सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उत्तम आय और जीवनशैली, विभिन्न माध्यमों से धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी, लघु यात्राएं हो सकती हैं या मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य का, विशेषकर आंखों का ध्यान रखें, संयम का जीवन जिएं। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, श्वेत वस्त्र, दही और चीनी का दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(17/04/2028 - 03/02/2029)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 04/10/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/04/2028 को प्रारंभ होकर 03/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। तरक्की करने के लिए यह समय बहुत अच्छा है। आप में नेतृत्वक्षमता उत्तम है। उच्चाधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। सरकार से सम्मान मिल सकता है। इच्छाएं पूर्ण होंगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, आपकी छवि उत्तम होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इस से नीति और धैर्य द्वारा बचा जा सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार से लाभ हो सकता है। आपके पिता को निवेश से

लाभ हो सकता है। माता, सफल और धनी बनेंगी, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उच्चपद, धन, इच्छाओं की पूर्ति और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे। परामर्शदाता भी सफल रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकारों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र
(03/02/2029 - 05/06/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 04/10/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 03/02/2029 को आरंभ होकर 05/06/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और सुविधा संपन्न होंगे। परिवारजनों और अन्य लोगों की सहायता करेंगे। विवाहित जीवन का सुख मिलेगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। मनोरंजन के लिए यात्रा पर जा सकते हैं। विवाह हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ-होगा, यात्रा होगी, घरेलू सुख रहेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को सफलता, धन और कार्यक्षेत्र में प्रशंसा की प्राप्ति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए बहुत से मित्र, धनलाभ, सफलता और उत्तम वाक्शक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, उन्नति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाता पहले किये निवेश से प्रगति करेंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ सौं सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - मंगल
(05/06/2030 - 12/05/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 04/10/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/06/2030 को प्रारंभ होकर वद 12/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको धनलाभ उत्तम होगा, मगर व्यर्थ के खर्चों से बचना श्रेयस्कर रहेगा। आपकी बुद्धि और कल्पनाशक्ति उत्तम रहेंगी। प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। परिवार में कटुता से बचाव करें। आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी, साझेदार के माध्यम से या विरासत द्वारा धनागम हो सकता है। अप्रत्याशित घटना या परिवर्तन संभव है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सट्टेबाजी से लाभ, प्रोन्नति, परीक्षा में सफलता और उच्चाधिकारियों से लाभ की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को अचानक लाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, आय बढ़ेगी, धनी बनेंगे और सम्मानित होंगे। माता को घरेलू सुख रहेगा, धनार्जन उत्तम होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए अधिक खर्च, उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति की प्राप्ति और वाहन सुख का संकेत है।

आपकी संतान सफलता और प्रशंसा प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साह उत्तम रहेगा, सफल होंगे। परामर्शदाता सौभाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, मसूर और तांबा दान में दें।